eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

साहित्य शोध के विविध परिप्रेक्ष्य एवं चुनौतियाँ (हिन्दी के विशेष सन्दर्भ में)

[1]दिग्विजय कुमार राय
[1]एसोसिएट प्रोफेसर, बी0.एस.एन.वी पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, लखनऊ

Received: 10 Jan 2022, Accepted: 20 Jan 2022, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2022

Abstract

प्रत्येक शैक्षिक अनुशासनों में निरंतर शोध एवं अनुसंधान से नए–नए ज्ञान के अभ्युदय की होड़ लगी है। इससे शिक्षा के प्रत्येक विषय अपने को विकसित करने के लिए अन्य शैक्षिक अनुशासनों का भी आश्रय ले रहे हैं। फलतः अन्तरानुशासनात्मक शोध को महत्त्व मिल रहा है और नवीन सूचनाओं के प्रस्संकरण (प्रॉसेसिंग) से सर्वथा अद्यतन उपयुक्त एवं प्रासंगिक ज्ञान को अन्वेषित करने का प्रयत्न हो रहा है। स्वाभाविक है कि वर्तमान परिस्थिति में हिन्दी भाषा एवं साहित्य भी इसका लाभ उठाकर विविध अनुसंधानात्मक परिप्रेक्ष्य में खड़ी चुनौतियों को अन्वेषित करते हुए अपने शोध अनुसंधान का मार्ग प्रशस्त करे।

विषय संकेतः– साहित्य शोध, विविध अनुसंधानात्मक, इतिहास लेखन एवं शैक्षिक अनुशासन।

Introduction

अन्य अनुशासनों की अपेक्षा साहित्य शोध के परिप्रेक्ष्य कई अर्थों में भिन्न एवं विशिष्ट हैं। साहित्य मूलतः सर्जनात्मक विधा है। उसे सम्पूर्ण वाङमय के अन्य अनुशासनों की तरह ही नहीं लिया जा सकता है। सर्जनात्मक होने के कारण साहित्य शोध के कई आयाम बनते हैं और साहित्य शोध को चुनौतियाँ भी अलग हैं। यद्यपि साहित्य के मौलिक प्रतिमान नहीं बदलते फिर भी बदलते हुए युगबोध के कारण प्रविधि, प्रक्रिया और परिप्रेक्ष्य आदि में परिवर्तन निश्चित होता है, दूसरे भाषा को सतत् परिवर्तनशील प्रक्रिया में भाषा का रूप बदलता है और युगीन प्रवृत्तियाँ बदती रहती है। साहित्य का अनिवार्य संबंध समाज से है और समाज को संवेदना निरंतर परिवर्तनशील होकर नए स्वरूप ग्रहण करती रहती है। फलतः साहित्य की चेतना का निरंतर रूपांतरण होता रहता है। विगत का साहित्य चिन्तन वही नहीं था जैसा कि आज है। इससे साहित्य क्षेत्र में अनुसंधान के नवीन विषयों की सम्भावना अनवरत बनी रहती है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के पूर्व हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन के समय हिन्दी की आधारभूत सामग्री कितनी सीमित थी यह किसी से छिपा नहीं है। उस समय कुछ खोज, रिपोर्ट या विद्वानों के व्यक्तिगत प्रयत्नों की फलश्रुति के अतिरिक्त कुछ भी शोध सन्दर्भ उपलब्ध नहीं था। किन्तु आचार्य शुक्ल और शुक्लोत्तर युग के इतिहास लेखन की परम्परा के सूत्रपात और अन्य कारणों से कतिपय शिक्षक आलोचकों के श्रमसाध्य अनुसंधान से साहित्य का अकादमिक क्षेत्र समृद्ध हुआ है। पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन ने हिन्दी के रचनात्मक संसार का असीमित विस्तार कर दिया है। केवल सौ वर्षों के इतिहास में भाषा साहित्य के अनुसंधान में प्रचुर प्रगति हुई है। फोर्ट विलियम कॉलेज में हिन्दी का उँगलियों पर गिना जाना वाला साहित्य था तो आज देश ही नहीं दुनिया के अधिकांश

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

विश्वविद्यालयों में हिन्दी के पठन–पाठन को परम्परा विकसित हो रही है। स्वाभाविक हो है कि हिन्दी साहित्य के विश्वस्तरीय पाठ्यक्रम और अकादमिक स्तर के ज्ञान को दुनिया के समक्ष प्रस्तुत किया जाए।

इन क्षेत्रों में नवाचारों प्रयोग से अध्ययन एवं अनुसंधान के परम्परागत स्वरूप में नया मोड़ आया है। साहित्य शोध और अनुसंधान के क्षेत्र में डिजिटल शब्दों और संदर्भ को शोध में कैसे लिए जाए और उस पर कितना भरोसा किया जाए, साहित्य शोध के लिए यह जानना भी जरूरी हो गया है। सन्दर्भ उपयोग के लिए ऑनलाइन पुस्तकालय और ऑनलाइन पत्र–पत्रिकाओं ने नवीन संभावना को जन्म दिया है। सृजन की डिजिटल दुनिया साहित्य सृजन की मुद्रित परम्परा के साथ बहुआयामी संप्रेषण के नये अनुभव (मल्टीमीडिया) को जन्म दे रही है। इन संभावनाओं ने साहित्य शोध के समक्ष नवीन संभावना एवं चुनौतियों को जन्म दिया है। सम्प्रति अन्तरानुशासनात्मक शोध के वातावरण में विविध नए विषयों की संभावना बनी है। अन्य भाषा एवं साहित्य का अनुदित रूप आज हमारे समक्ष सुलभ है।

वैश्वीकरण एवं सूचनाक्रांति के दबाव में जटिल होती संवेदना से विषय का सरलीकरण सामान्य नहीं रहा। इस परिस्थिति में साहित्य के सामान्य नियमों की खोज और भी चुनौतीपूर्ण हो गया। आज सूचना का साम्राज्य निरन्तर बढ़ रहा है। उनमें से उपयोगी और प्रासंगिक सूचनाओं का पृथक्करण करते हुए इनके प्रसंस्करण (प्रोसेसिंग) से नये ज्ञान या तथ्यों को उद्घाटित करने वाले अनुसंधान का महत्त्व दिनों दिन बढ़ रहा है। स्वाभाविक हो, शोध को दुनिया में लकीर का फकीर बने रहने की आवश्यकता अब नहीं रही। अपने शोध को सर्वथा वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक तथा प्रासंगिक और उपयुक्त बनाने के लिए शोध को प्रक्रिया और नवीन विषयों पर विचार करना नितांत आवश्यक है। साहित्यिक विमर्श, न प्रवृत्यात्मक अध्ययन, शिल्पगत अध्ययन, नयी भाषिक प्रवृत्तियों के अन्वेषण, साहित्य के समाजशास्त्रीय, समाजभाषिका, पाठालोचन, शैली वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक अध्ययन के विविध परिप्रेक्ष्य में नवीन संभावनाओं का अन्वेषित करने की नितांत आवश्यकता है।

इलेक्ट्रानिकों ने शब्दों को गत्यात्मक और बहुआयामी बना दिया है। मुद्रित पाठ की परंपरा से अलग इलेक्ट्रानिक शब्दों का अध्ययन पाठकों के लिए नितांत नवीन है। इलेक्ट्रानिक मुद्रित पाठ की परंपरा से अलग इलेक्ट्रानिक शब्दों का अध्ययन पाठकों के लिए नितांत नवीन है। इलेक्ट्रानिक पृष्ठ पर एक शब्द दूसरे शब्द और प्रत्ययों से हाइपरलिंक की सुविधा से जुड़े होते हैं। एक छोटी से क्लिक हमें सूचनाओं के महासमुद्र में गोता लगाने हेतु पहुँचा देती है। हमारे अनुभव जगत के लिए कम्प्यूटर की कृत्रिम स्मृति को उपस्थिति नितांत नवीन है। इलेक्ट्रानिक तकनीक भाषा को सर्वथा नए रूप को गढ़ रहा है। भाषा के कुछ महारथी इन्टरनेट के वैश्विक तंत्र का लाभ उठाकर 'ग्लोबिस'' जैसी कृ तिम भाषा के अविष्कार में लगे हुए है। आज बहुत से ऐसे रचनाकार हैं जो मुद्रित माध्यम को महंगा और दुर्लभ समझते हुए इन्टरनेट पर प्रकाशित और प्रसारित हो रहे हैं। यह एक ऐसा माध्यम है जो पलक झपकते ही प्रकाशन को दुनियाँ के दोनो छोरों तक पहुंचा देता है। आज एक और जहाँ 'अभिव्यक्ति' 'काव्यालय' जैसे नेटजीन हैं तो दूसरी ओर वागर्थ, तद्भव जैसी पत्रिकाएँ भी ऑन लाइन संस्करण निकाल रही हैं। यहाँ प्रकाशन की एक बड़ी संभावना है। हिन्दी जगत को इसका विधिवत् उपयोग करने की आवश्यकता है।

इलेक्ट्रानिक भाषा को प्रवृत्तियों को अन्वेषित करते हुए उसके आलोक में डिजीटल साहित्य की संभावना और स्वरूप को अविष्कृत और मूल्यांकित करने की आज के समय की आवश्यकता है। दूसरी और ब्लॉग लेखन के माध्यम से आत्माभिव्यक्ति का एक नया स्वरूप प्रचलित हो रहा है। भाषा और साहित्य के अनुसंधानकर्ताओं को शोध के लिए आज इस और उन्मुख होने की जरूरत है।

प्रकाशन को वैश्विक संभावना ने शोध के विस्तार के लिए नया अवसर प्रदान किया है। आज सभी अकादमिक अनुशासन शोध के अन्तर्राष्ट्रीय मानक और प्रारूप तय करने की स्थिति में है। हिन्दी जगत को भी शोध के प्रारूप में एकरूपता लाने के लिए और वैश्विक आधार पर हिन्दी के शोधों को प्रतिष्ठित करने के लिए शोध लेखन के मानक प्रारूप को निश्चित करना होगा। मार्डन लैग्वेज एसोशिएसन आफ अमेरिका के हैण्डबुक या शिकागो विश्वविद्यालय के 'शिकागो मैनुअल ऑफ स्टाइल की तरह हिन्दी के शोधविदों को या शोध संस्थाओं को परस्पर सम्मति से शोध लेखन के प्रारूप को मानकीकृत करने की जरूरत है। शोध की गुणवत्ता को सुधारने और पुनरावृत्ति से बचाने के लिए आज आवश्यकता है कि हिन्दी भाषा एवं साहित्य के सभी प्रकाशित संदर्भ ग्रंथों को और रचनाओं की विशाल सूची बने और अध्ययनकर्ता को आवश्यकता पड़ने पर उसे उपलब्ध हो सके। यद्यपि यह ग्रंथ विज्ञानियों का कार्य है तो भी हिन्दी जगत को इसके लिए पहल करनी पड़ेगी। इससे छोटे स्थानों के शोध कार्य करने वाले शोधार्थियों को महत्त्वपूर्ण साहित्य सामग्री की जानकारी सहजता से उपलब्ध हो सकेगी।

इस संबंध में यह सूच्य है कि हिन्दी में सम्पन्न शोधकार्यों को बृहत् सूची wwwwww-shodh-net पर उपलब्ध है और आप अपने कार्य की सूचना को भी उस पर दर्ज कर सकते है। प्रकाशन शोध का अंतिम और महत्त्वपूर्ण चरण है। इसको दृष्टिगत रखते हुए अपने श्रम और धन से ही सही अपने शोध कार्य को प्रकाशित करने की आवश्यकता है। यद्यपि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इसको ध्यान में रखते हुए शोध प्रबंध की डिजीटल कॉपी को जमा करना अनिवार्य कर दिया है। आज आवश्यकता इस बात की है कि नए सिद्धान्तों एवं विचारों के आलोक में साहित्य का पुनरीक्षण हो, पुराने परम्परागत विषयों से हटकर नये अद्यतन विषयों का अन्वेषित किया जाए एवं शोध तथा सृजनात्मक भाषा में भेद करते हुए, विशेषणयुक्त भाषा से बचते हुए शोध के तथ्यपरक भाषा और प्रस्तुति की खोज हो। परस्पर एक दूसरे से जुड़े हुए बाजारीकरण, नगरीकरण और वैश्वीकरण को प्रक्रिया ने भाषा परिवर्तन के कई नये आयाम घटित किए हैं। भाषा के परम्परागत रूप से अलग आज पुनः भाषा सर्वेक्षण की आवश्यकता है।

आज के समय में आलोचनात्मक शोध अधिक हुये हैं और आलोचना ने साहित्य को अत्यधिक समृद्ध न किया है। तो भी साहित्य शोध को अन्य विषयों के साथ अन्तर अनुशासनात्मक शोधों के परिप्रेक्ष्य में आलोचना से अलग हटकर नये वैज्ञानिक शोधों की आवश्यकता है जिससे भाषा और साहित्य को और अधिक समृद्ध किया जा सके। साहित्य से संबंधित अनुसंधानों में शोध और आलोचना की मिलता को ध्यान में रखना उपयुक्त रहता है। आलोचक किसो कवि या लेखक की कृति को देखता परखता है। आधुनिक समय में कला के विविध रूपों की पर्याप्त मात्रा में सृजन हो रहा है और उसको प्रतिक्रिया आलोचना के रूप में होती है। आलोचना का संबंध विवेचन और मूल्यांकन से है और शोध का संबंध गवेषणा के सुनिश्चित कौशल से है, आलोचना का उद्देश्य रचना के अन्तर्निहित

गुणों को उद्घाटित करना है जबकि शोध का उद्देश्य ज्ञान के अनुद्घाटित तथ्यों की खोज है। आलोचना मूल्यात्मक निर्णय की ओर ले जाती है और शोध किसी सामान्य निष्कर्ष की ओरः अनुसंधान में उपयुक्त परीक्षण की प्रक्रिया के प्रयोग और प्रासंगिक आँकड़ों के संग्रह विश्लेषण से नवीन तथ्यों की अन्तदृष्टिपरक व्याख्या की जाती है।

सन्दर्भ–

- गैर अंग्रजी भाषियों द्वारा प्रयोग हेतु कई भाषाओं के शब्दों को मिलाकर बनाई गई कृत्रिम भाषा
- माडर्न, लैम्वेज एसोसिएशन यू.एस.ए. द्वारा प्रकाशित एम.एल.ए., हैण्ड बुक होता है। विश्वविद्यालय, कॉलेज शिक्षको द्वारा व्यापक स्तर पर अपनाए जाने वाला यह हैण्ड बुक में शोध विषय के चयन से लेकर प्रकाशन के भेजने तक के प्रत्येक चरणों पर प्रकाश डालता है। यह शोध आलेख लेखन की रीति को मानकीकृत करने वाला महत्त्वपूर्ण प्रकाशन है।
- द्रष्टव्य यू.जी.सी. का शोध उपाधि के सन्दर्भ में जारी नया दिशा निर्देश।